प्रेमा भक्ति

कर कृपा प्रभु दीनदयाला ।
तेरी ओट पूर्ण गोपाला ।।

रामजी ! राम !! राम !!!

संकलनकर्ता : प्रेम शर्मा (रामजी)

आरती

ज्योति से ज्योति जगाओ
गुरु जी, ज्योति से ज्योति जगाओ
हे योगेश्वर हे ज्ञानेश्वर
हे सर्वेश्वर हे परमेश्वर
निज कृपा बरसाओ ।

सद्गुरु ज्योति…

(२)

हम बालक तेरे द्वार पे आये
मंगल दरस दिखाओ ।

सद्गुरु ज्योति…

(३)

शीश झुकाय करें तेरी आरती
प्रेम सुधा बरसाओ ।

सद्गुरु ज्योति…

(४)

अन्तर में युग-युग से सोई
चिन्तन शक्ति जगाओ ।

सद्गुरु ज्योति…

(५)

सांची ज्योति जगे हृदय में
सोऽहं नाद जगाओ ।

सद्गुरु ज्योति…

(६)

जीवन मुक्तानन्द अविनाशी
चरणन शरण लगाओ ।

सद्गुरु ज्योति…

प्रस्तावना

आज सारा संसार दु:खों से पीड़ित देखकर मन अति खिन्न हो जाता है । जब हस्पताल की ऊंची-ऊंची मंजिलें देखते हैं, तो मन रो उठता है। जब घर-घर में अशान्ति, झगड़े, भाई-भाई में फूट, माया के चन्द टुकड़ों के लिए विरोध देख मन, चीत्कार कर उठता है। अपने प्यारे प्रियतम सर्व-शक्तिमान अखण्ड, ब्रह्माण्ड, नायक, कण-कण व्यापक और परिपूर्ण ब्रह्म के आगे, विनतियां करते हैं—ऐ मेरे मालिक ! इतना धन्य-धान्य होते हुए भी क्यों दु:खी हो रहे हैं ? तो अपने आप उत्तर आता है" क्योंकि पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव के कारण लोगों की वृत्तियां ईश्वर-भजन से हटती चली जा रही हैं और सिनेमा, शराब तथा अन्य बातों की ओर ज्यादा बढ़ती जा रही है। इसीलिए यह सब दु:ख बढ़ते जा रहे हैं।

नाम विसार करे रस भोग
सुख सपने नहीं, तन में रोग (गुरु-वाणी)

जे न भजहि राम भगवाना
ते नर पशु बिन, पूंछ समाना (रामायण)

तन हेतु जो खाते पकाते
पाप में घुट कर मरे (गीता)

नाम लिया हरि का जिसने
तिन और का नाम लिया, न लिया (वेद)

चारों उदाहरणों से यह सिद्ध हो जाता है कि अगर हम भक्ति ग्रहण कर लें, तो यह संसार की विघ्न-बाधाएं भी दूर हो जायेंगी और परलोक के सुख के, भी अधिकारी बन जायेंगे।

नाम क्या है? भक्ति क्या है? इसका भी तो हमें पता चले, तभी तो हम इसे अपनायेंगे और हम तीनों प्रकार की व्याधियों से मुक्त हो जायेंगे।

अपने मन में किसी भी मन्त्र या नाम के प्रति श्रद्धा रखकर उसका उच्चारण करना, नाम है।

नाम भक्ति क्या है?

नाम को लगातार उच्चारण-नाम में मन जोड़ना नाम-भक्ति है।

सुन दूसरों से ही किया करते भजन अनजान हैं
तरते असंशय वह ही मतिमान है (गीता)

इस छोटी सी पुस्तक में कुछ मन्त्र तथा भजन एकत्रित किये हैं। इनको बोल-बोलकर ही हम भव-सागर से पार उतर जायेंगे ऐसा दृढ़ विश्वास है।

—राम जो राम राम!

याचना

कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूर्ण गोपाला

करो दया करो दया करो दया मेरे साई
ऐसी मति दीजे मेरे ठाकुर सदा-सदा तुध ध्याहि

स्वास स्वास सिमरु गोविन्द
मन उतरे को उतरे चिन्त

जावक जन जाचै प्रभुदान
कर कृपा देवो हरि नाम
साध जना की मागू धूरि
वार ब्रह्म मेरी श्रद्धा पूरि
सदा-सदा प्रभु के गुण गाऊं
स्वांस स्वास प्रभु तुम्हें ध्यांऊ
चरण कमल सिऊ लागे प्रीत
भक्ति करू प्रभु की नित नीत
एक ओट एको आधार
नानक मांगे नाम प्रभु सार

मंगल भवन अमंगल हारी
द्रवहु सो दशरथ अजर विहारी
दीन दयाल विरदू सम्भारी
हरो नाथ मम संकट भारी

राम कृपा नाशही सब रोगा
जो एही भावि बनै सयोगा

जां पर कृपा राम की होई
तां पर कृपा करे सब कोई

अब प्रभु कृपा करो एही भांति
स्व तज भजन करूं दिन राती

जां पर कृपा दृष्टि अनुकूला
ताही न व्याप त्रिविध भवशूला

राखा एक हमारा स्वामी
सगल घटा का अन्तरयामी

ऐसी कृपा करो प्रभु मेरे
हरि नानक विसर न काहू वेरे

जगत जलन्धा राख
अपनी कृपा धार
जित द्वारें उभरें
तित ते ले हो उभार
सतगुरु सुख वेखालिया
सच्चा शब्द विचारि
नानक अवर न सूझई
हरि विन बख्शन हारि

त्वमेव माता च पितात्वमेव
त्वमेव बंधु च सखा त्वमेव

त्वमेव विद्या द्रविणनम् त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देव देव

श्री राम जय राम जय-२ राम
श्री राम जय राम जय-२ राम
शंकर हरि ॐ जय जय सिया राम
जय-जय हनुमान ।

इन मन्त्रों के द्वारा हमें रोज भगवान से याचना करनी चाहिए। अगर रोज हम मांगेंगे, तो एक-न-एक दिन, ऐसा अवश्य आयेगा कि हम हरि नाम रंग में रंग जायेंगे, और जिस कार्य के लिए इस संसार में आये हैं, पूर्ण करके जायेंगे।

भजन १ (देख ले)

राम नाम अति मीठा है
कोई गा के देख ले
आ जाते हैं राम
कोई बुला के देख ले

(१)

जिस मन में अभिमान बसा हो
राम कहां से आयें
तेरे मन में घोर अन्धेरा
राम कहां से आये
धूप राम की भक्ति का, जला के देख ले
आ जाते हैं राम···

(२)

मन भगवान का मन्दिर है
यहां मैल न आने देना
हीरा जन्म मिला है
इसको व्यर्थ न जाने देना
राम नाम रस पीकर और पिला के देख ले
आ जाते हैं राम···

(३)

आधे नाम पे आ जाते हैं
देखे कोई बुलाने वाला
बिक जाते हैं राम
हो कोई, मोल चुकाने वाला
राम नाम की महिमा को तू गाके देख ले
आ जाते हैं राम···

(४)

जब जब याद किया भक्तों ने
प्रभु दौड़े दौड़े आये
भक्तों की खातिर उसने
अनेकों रूप बनाये
आ जाते हैं राम···

अपने प्यारे राम को मन में बसा के देख ले
आ जाते हैं राम···
राम के चरणों में तू शीश झुका के देख ले
आ जाते हैं राम···

राम को अब तू अपना बना के देख ले
आ जाते हैं राम···

भजन २ (करो कृपा)

मन में जग जाये ज्योति तुम्हारी
राम ऐसी करो कृपा

याचक खड़ा द्वारे
शिक्षा दे दो राम प्यारे
मुझे चढ़ी रहे नाम खुमारी
ऐसी···

(२)

मोह माया का मिटे अन्धेरा
यह जीवन हो जाये तेरा
मन में गूंजे तान तुम्हारी
ऐसी···

(३)

भव सागर में घिर गई नैय्या
राम कृपा बिना कौन खेवय्या
दीजो पार उतारी
ऐसी···

(४)

सुरत शब्द का मेल मिलाओ
मेरे मन में कमल खिलाओ

मेरे भीतर करो उजियारा
ऐसी···

(५)

सदा अनुग्रह तेरा मानूँ
तेरी कृपा से सुख दुःख जानूँ
दास को लीजो उभारी
ऐसी···

भजन ३ (चेतावनी)

नर तन पाके तू भक्ति कमा ले
चौरासी के बन्धन से मुक्ति करा लि

(१)

भक्ति है केवल निजी वस्तु तेरी
त्याग दे जग की मैं और मेरी
तू मोह माया से खुद को बचा लि

(२)

बीते न ग़फलत में तेरी जिन्दगानी
स्वास धन लुटा के न कर अब हानि
जीवन का सच्चा लाभ उठा ले

(३)

भक्ति की खातिर हुआ तेरा आना
गर्भ का कौल तू हरगिज निभाना
हर श्वास मालिक का नाम कमा ले

(४)

सन्त अनुकूल हो, तो भक्ति मिलेगी
सत्‌गुरु की रहमत से मुक्ति मिलेगी
गुरु चरणों का तू आसरा ले ले

माता की भेटें

वाह्-व-वाह मात मेरी पींगा झूटे
झूटे सखिया नाल मात मेरी पींगा झूटे

(१)

सावन दी ऋतु आई सुहानी
मवन ते बदलियां छाईयां
चिन्त पुरनी मात मेरी नें
सब नू चिट्ठियां पाईयां
बनके कन्जका रूप देवियां
उतर पहाड़ों आईयां
मात मेरी पींगा झूटे
वाह्-व-वाह···

(२)

बोड़ां उते पींगां पाईया
दाती बोड़ां वाली
बूटे-बूटे झूटे लेदिया
कोई पींग नहीं खाली
मस्त पवनियां पई झुलावे
पींग बनो हर डाली

मात मेरी पींगा झूटे
वाह-व-वाह···

(३)

लम्बे ऊंचे झूटे झूटन
चढ़ के पवन हुलारे
सूरज बदलां दे विच लुक के
देखे खेल निराले
चांद झरोखे विचों झांके
मेरी मां दी नजर उतारे
मात मेरी पींगा झूटे
वाह-व-वाह···

(४)

वर्षा ऋतु विच वदली वनके
पईयां सुख वरसावे
मेहरा दे मां छिटे देवे
दिल दी आस पुजावे
(सब दी आस पुजावे)
हर दे जोश दिलां दो चिन्ता
मां सब दे कष्ट मिटावे
मात मेरी पींगा झूटे
वाह-व-मात···

(५)

चिन्त पुरनी पींगा झूटे
ज्वाला माई पींगा झूटे
चमुण्डा देवी पींगा झूटे

कागडा वाली पींगा झूटे
नैना देवी पींगा झूटे
कालका माई पींगा झूटे
वेश्णो माई पींगा झूटे
झूटे सखियां नाल मात मेरी पींगा झूटे
वाह-व-वाह···

(६)

झूटन वारो वारी मात मेरी पींगा झूटे
वेख माला वारी मई जावे
मात मेरी पींगा झूटे
वाह-व-वाह···

भेंट २ [नाम माला]

तेरे नाम दी जपां मैं माला
ओ शेरां वाली कर कृपा
तेरे नाम दी···

(१)

ऐ जग कलिया फुल ने तेरे
तू बागां दी माली
मेरी बगियां विच है पतझड़
करम कमावण वाली
भरो झोली मेरी मात ज्वाला
ओ शेरां···

(२)

मन मन्दिर में, आके दाती, यहां पे करो बसेरा
अपनी ज्योति दे दे मैया, होवे दूर अन्धेरा
मेरी दुनिया में कर दो उजाला
ओ शेरां···

(३)

तू चाहे ते उजड़े बन विच, कोयल गीत सुनावे
सीपियां दे विच, तेरी ज्योति जा मोती बन जावे
तेरा चंचल है खेल निराला
ओ शेरां···

भेंट ३

तनू बुलावे अम्बे तेरे, ये लाल माँ
गोदी विच लैके कदी, पुछ ले तू हाल माँ

(१)

जानी जान दुनियां दी वाली कहावे तू
फेर क्यों न अम्बे मेरे दुःखड़े मिटावे तू
मैं वी तेरा बच्चा हाँ कर लै ख्याल माँ
गोदी विच···

(२)

रुक गये ने हज्जू अखां तक हारियां
तेरियां उड़ीका विच मुदतां गुजरियां
तैनू बुलावे अम्बे तेरा ये लाल माँ
गोदी विच···

(३)

माँ ते पुत वाला नाता नईयो तोड़ना
जगदम्बे बचड़े नू खाली नई मोड़ना
छट्टे मेहरा दे दे के करदे निहाल माँ
गोदी विच···

भजन ४

तार मिला के देख

राम बन्धे हुए खिचे हुए चले आयेंगे
मन की तारों से तार मिला के तो देख

(१)

जिसने गाया मिला, उसको मुक्ति का धाम
तरे पत्थर, लिखा जिस पर, रघुवर का नाम
तेरी नैय्या, किनारे पे क्यों न लगे
नाम की पतवार, लगा के तो देख
राम बन्धे···

(२)

पूजा धन्ने ने पत्थर को, प्रभू जानकर
पाया केवट ने, धो-धो चरण पान कर
पाया मीरा ने, विष का अमर मानकर
इसी अमृत को, तू भी तो, चख के देख
राम बन्धे···

(३)

पाया शबरी ने जग के बन्धन काटकर
गौतम नारी ने चरणों की रज चाटकर
पाया कुब्जा ने चन्दन लगा के उसे
उन्हीं चरणों में तू सिर झुका के तो देख
राम बन्धे···

(४)

मन के मन्दिर में पगले बिठा ले उसे
जीवन नैय्या का केवट बना ले उसे
फिर क्या डर है, जो पतवार भी दूर हो
अपनी वाणी में उसको बिठा के तो देख
राम बन्धे···

(५)

वह है ठाकुर, पुजारी तू बन के तो देख
वह है दाता, भिखारी तू बनके तो देख
उसके दर से, कोई खाली लौटा नहीं
उसके आगे तू झोली फैला के तो देख

(६)

कौन कहता है भगवन् आते नहीं
सच्चे मन से उसे हम बुलाते नहीं
धन्ने जैसी पुकार लगा के तो देख
मीरा जैसी लगन लगा के तो देख
राम बन्धे···

भजन ५

दिनचर्या

राम नाम गुण गाये-हम राम नाम गुण गायें

(१)

प्रातः स्नान करे नेम से
ध्यान करे फिर बड़े प्रेम से
बैठ समाधि लगाये
हम राम नाम···

(२)

सब विषयों से मन को मारकर
मन का निज स्वरूप धार कर
जन्म का लाभ उठाये
हम राम नाम···

(३)

घर के सब झगड़े छोड़कर
सबसे अपनी प्रीति तोड़कर
नाम से प्रीति लगाये
हम राम नाम···

(४)

घर मूरत सन्मुख राम की
पूजा करूं घनश्याम की
कर आरती मन परचाये
हम राम नाम···

(५)

कन्द मूल फल आन कर
वेद का मुख से गान कर
प्रभु को भोग लगाये
हम राम नाम···

(६)

अपने प्रभु को टोल-टोल कर
मीठा-मीठा बोल-बोल कर
तन मन खूब रिझाये
हम राम नाम···

(७)

पकड़ चरण फिर हाथ से
अर्ज करूं घनश्याम से
सब दुःखड़े खोल सुनाये
हम राम नाम···

(८)

किस्मत तभी बलवान हो
जब सन्मुख श्री भगवान हो
प्रेम से दर्शन पाये
हम राम नाम···

(९)

दासी का यही भाव है
भक्ति का मन में चाव है
बार-बार शीश झुकाये
हम राम नाम···

भजन ६

कल्याण मार्ग

आओ भक्तों तुम्हें दिखायें
हम मार्ग कल्याण का
जिस पर चलकर हो सकता है
दर्शन अपने राम का
श्री राम बोल···

(१)

दया धर्म और सत्य नम्रता
अपने मन में धारो तुम
अपने प्रभु की सेवा करके
सारी उमर गुजारो तुम
चंचल मन को वश करने का
साधन जरा विचारो तुम
पंच शत्रु अन्दर के तुम
ज्ञान के तीर से मारो तुम
काम क्रोध मोह लोभ मिटाओ
नाश करो अभिमान का
जिस पर···

(२)

यथा योग्य सन्मान करो तुम
ईश्वर के भक्त प्यारों का
पर उपकार करो तुम बहनों

उन दुःखियों गम के मारों का
बन जाओ तुम एक सहारा
जग में बिना सहारों का
आगे बढ़के थाम लो दामन
मजबूरों और लाचारों का
गले लगा लो हर मुफलिस को
बांटो गम गमखारों का
जिस पर···

(३)

अपनी किस्मत लेकर बन्दा
इस दुनियाँ में आता है
हर प्राणी को उसका हिस्सा
देता आप विधाता है
कौन किसी के घर जाता है
कौन किसी का खाता है
अपने पिछले कर्मों का लेखा
हर इन्सान चुकाता है
करो स्वागत श्रद्धा से तुम
घर आए मेहमान का
जिस पर···

भजन ७

झांकी मेरे राम की

जर्रे जर्रे में है झांकी मेरे राम की
किसी सूझ आँख वाली ने पहचान ली

(१)

नाम देव ने पकाई
रोटी कुत्ते ने उठाई
पीछे घी का कटोरा लिये जा रहे
बोले रूखी मत खाओ
थोड़ा घी भी लेते जाओ
रूप अपना क्यों मुझसे छिपा रहे
तेरा मेरा इक रूप, फिर काहे को हजूर
तूने शक्ल बनाई है श्वान की
मुझे ओढ़नी ओढ़ा दी इन्सान की
जर्रे-जर्रे में·····

(२)

निगाह मीरा की निराली
पी गई जहर की प्याली
ऐसा गिरधर को बसाया हर श्वास में
जब आया काला नाग
बोली धन्य मेरे भाग
प्रभु आये आज सांप के लिबास में
आओ-आओ बलिहार, काले कृष्ण मुरार
बड़ी कृपा है कृपानिधान की
धन्यवादी हूं मैं आपके अहसान की
जर्रे-जर्रे में·····

(३)

इसी तरह सूरदास, निगाह जिनकी थी खास
ऐसा नैनों में था नशा हरि नाम का

नन हुए जब बन्द तब मिला वह आनन्द
आया नजर नजारा घनश्याम का
हर जगह वह समाया
सारे जग को बताया
आई आंख पे जब रोशनी ज्ञान की
देखी झूम-झूम झलकियां राम की
जर्रे-जर्रे में.....

(४)

गुरु नानक, कबीर
जिनकी लम्बी नजीर
देखा पत्ते-पत्ते पे निराकार को
नजदीक और दूर
वही हाजिर हजूर
यही सार समझाया संसार को
मेरे राम यह जहान
शहर गांव बियाबान
मेहरबानी है, उसी मेहरबान की
जर्रे-जर्रे में.....

भजन ८

सतगुरु नाल जी

एदा कण-कण विच है जलाल जी
मेरा सतगुरु राखा, मेरे नाल जी

(१)

जिवें मच्छली दे चारों पासे जल है
मेरा राम भी समाया जल थल है
ओदे होंदियां न नेड़े आवे काल जी
मेरा सतगुरु.....

(२)

राम लाड़ां नाल, बच्चियां नू पालदा
देके थापड़ा ऐ डिगदे सम्भालदा
देवे हंस के मुसीबतां नू टाल जी
मेरा सतगुरु.....

(३)

ऐह दी सिखिया ते पूरे-पूरे तुलिये
गुरु रब है शरीर ते न भूलिये
रहे याद सदा रूप ऐ विशाल जी
मेरा सतगुरु.....

(४)

सन्तो कदी ऐदी छड़िये न आस जी
डावांडोल कदी होवे न विश्वास जी
रहिये बन ऐहदे चरण दे दास जी
मेरा सतगुरु.....

भजन ९

विश्वास की आशा

तेरे चरणां विच, मेरी अरदास दाता
सुपने विच वी न डोले मेरा विश्वास दाता

(१)

उतराइयां चड़ाइयां कई
जिन्दगी विच आन्दोयां ने
हथ होवे तेरा सिर ते
दूरों लंघ जादोयां ने
रख नजर मेहर दी तू
मेरे ते खास दाता
तेरे चरण·····

(२)

विश्वासी सन्ता दे नेड़े हुंदी जावां
श्रद्धा भक्ति दृढ़ता दे गुण मैं अपनावां
गुरमंत दे पर्चे तो करो मैंनू पास दाता
तेरे चरण·····

(३)

गुरु पूरा, ज्ञान पूरा, निरंकार वी पूरा है
पूरी तेरी साध संगत दरबार वीं पूरा है
ऐना पूर्ण सन्ता दा, बना मैं दास दाता

(४)

सागर तू, बेड़ी तू, चप्पू, तू किनारा तू
असी अनातरु हाँ ते तारन हारा तू
तेरे लेखे लग जाए मेरा हर श्वास दाता
तेरे चरण·····

भजन १०

इक तेरा सहारा, सहारा लोड़ है
दुनिया दे कुल फिकरां तो
किनारा लोड़ है
इक तेरा·····

(१)

सिर उते, हथ होवे जेकर आपदा
सुख सारी दुनियांदा, झोली विच आ जावे
बस सिर ते हथ तेरा प्यारा लोड़ है
इक तेरा·····

(२)

आपजी दा चेता कीता टलिया मुसीबतां
मुड़-मुड़ याद आवन आपदीयां रहमता
बस रहमत दा तेरी फुवारा लोड़ है
इक तेरा·····

(३)

कर देओ पक्की मेरी डोर विश्वास दी
हो जाए हुन पूरी मेरी हर आस जी
दिन राती एह तेरा नजारा लोड़ है
इक तेरा·····

(४)

आसरा है आपजी दा आपजी दी ओट है
कट देओ मेरे विचो जितना वी खोट है
एह जीवन, वांग, गंगा दी धारा लोड़ है
इक तेरा·····

भजन ११

मेरा सच्चा आसरा

तू मेरा जीवन आसरा
मेरे शहनशाह, मेरे सत्गुरु प्यारे
मैं तां हुन जी रहियाँ दाता तेरे सहारे

(१)

फड़ियाँ नी बाहाँ, दाता, देवीं तूं छोड़ न
चरणाँ नाल लाके, दाता देवीं तूं छोड़ न
जदों दा असा तेनूं जनियाँ रंग मनियाँ
दुःख मिट गये सारे
मैं ता बस···

(२)

आठों पहर तेरियाँ गावाँ कहानियाँ
चरणाँ नाल लाई रखीं, बड़ियां मेहरबानियाँ
करांगी तेरी बन्दगी, सारी जिन्दगी
मेरे सतगुरु प्यारे
मैं तां बस···

(३)

आठों पहर तेरा, चढ़या सरूर है
कण-कण दे विच दाता तेरा ही नूर है
मैं तां बस तेरी हो गई, तुझमें खो गई
मेरे सत्गुरु प्यारे
मैं तां बस···

(४)

डूंगी-डूंगी नदियाँ नाव पुरानी
मैं अनतारु दाता, तरन न जानी
तेरयां चरण दा लया आसरा
मेरे शहनशाह मेरे सत्गुरु प्यारे
मैं तां बस···

(५)

तेरे भक्त मैनू प्यारे लगदे ने
दास तेरे मेरियाँ अखाँ दे तारे ने
मैं तां बस हुन जी रहियाँ इक तेरे सहारे
तेरे कोलों मुख मोड़ा न
तैनू छोड़ाँ न, मेरे राम प्यारे
मैं तां बस···

भजन १२

तेरा द्वारा

मेरे राम जी मुझको देना सहारा
कहीं छूट जाये न तेरा द्वारा

(२)

तेरे रास्ते से हटाती है दुनिया
इशारों से मुझको बुलाती है दुनिया
न समझुं मैं जग का यह झूठा इशारा
कहीं छूट जाये न तेरा···

(३)

तेरे नाम के गीत गाती रहूं मैं
हरदम तुझको ध्याती रहूं मैं

तेरा नाम है मुझको प्राणों से प्यारा
कहीं छूट जाए न तेरा···

(४)

इक पासे सागर छल्ले पैण घूमण घेरिया
इक पासे रहमतां ते बख्शिशां तेरियाँ
तू ही मेरा चप्पु किश्ती तू, ही है किनारा
कहीं छूट जाए न तेरा···

(५)

तेरे सिवा, मन में समाए न कोई
लग्न का यह दीपक, बुझाए न कोई
सदा जले दीपक नाम का तुम्हारा
कहीं छूट जाए न तेरा···

(६)

किसे नू, जवानी, धन, दौलतां, दा मान है
मैंनू तेरे चरणा दी, धूली उते मान है
तेरी कृपा से ही मेरा गुजारा
कहीं छूट जाए न तेरा···

भजन १३

सुन ले अरज

मेरी सुन ले अरज, मेरी सुन ले अरज
मेरी सुन ले अरजिया, प्यारे राम

(२)

सब जग स्वामी, तुम अन्तरयामी
विश्व चराचर के, सुख धाम
मेरी सुन··· ले

(३)

नाम तुम्हारा भव भय हारा
सिमरण से हो, पूर्ण काम
मेरी सुन ले···

(४)

दीनदयाला, जन प्रतिपाला
ध्यावत मुनिगन, आठों याम
मेरी सुन ले···

(५)

ब्रह्मानन्द शरण में आइयो
चरण कमल में, दो विश्राम
मेरी सुन ले···

भजन १४

शरण

तेरी शरण में आय के
फिर आस किसकी कीजिए

(२)

नहीं दीख पड़ता है मुझे
दुनिया में तेरी शान का
गंगा किनारे बैठ कर
किम कूप का जल पीजिए

(३)

हरगिज नहीं लायक हूं मैं
दरबे तेरे दरबार का
मेरी खता को माफ कर
दीदार अपना दीजिए

(४)
पतित पावन नाम सुन के
मैं शरण तेरी पड़ा
सफल कर इस नाम को
अपना मुझे कर लीजिए

(५)
मिलता है ब्रह्मानन्द
जिसके नाम लेने से सदा
ऐसे प्रभु को छोड़ कर
फिर कौन सो हित कीजिए

भजन १५
नाम लिया

नाम लिया हरि का जिसने
तिन और का नाम लिया न लिया

(२)
जड़ चेतन सब जगजीवन को
घट में अपने सम जान सदा
सबका प्रतिपालन नित्य किया
तिन विप्रन दान दिया न दिया—नाम लिया···

(३)
काम किये परमारथ के, तन-मन-धन से करके
जग अतर कीरत छाय रही
दिन चार विशेष जीया न जीया—नाम लिया···

(४)
जिसके घर में हरि की चर्चा
नित होवत है दिन रात सदा

सतसग कथामृत पान किया
तिन तीरथ नीर पिया न पिया —नाम लिया···

(५)
गुरु के उपदेश समागम से
जिनके अपने घर भीतर में
ब्रह्मानन्द स्वरूप को जान लिया
तिन साधन योग किया न किया—नाम लिया···

भजन १६
लाज राख लीजिए

शरण पड़े की लाज, प्रभु राख लीजिए
करके दया दयाल, गुनाह माफ कीजिए

(२)
गरचे कपूत हूं पिता, न दूर कर मुझे
चरण-कमल में आसरा, मुझको भी दीजिए
शरण पड़े···

(३)
तेरी खुशी का काम, कोई बन पड़ा नहीं
अपने विरद को देख, जरा दिल में रीझिए
शरण पड़े···

(४)
तेरे बिना पालक, मेरा नहीं है दूसरा
स्वारथ के भी लोग हैं, किससे पतीजिए
शरण पड़े···

(५)
दिल में लग रही, दर्शन की लालसा
ब्रह्मानन्द मेरी विनती, अब तो सुन लीजिए
शरण पड़े··

भजन १ ७

नजर भर देख

नजर भर देख ले मुझको
शरण में आ पड़ी तेरी

(२)
तेरा दरबार ऊंचा है
कठिन तेरी है मंजिल का
हजारों दूत मार्ग में
खड़े हैं पन्थ को घेरी —नजर भर देख···

(३)
नहीं है जोर पैरों में
न दूजा संग में साथी
सहारा दे मुझे अपना
करो नहीं, नाथ अब देरी—नजर भर देख···

(४)
नहीं है भोग की वांछा
न दिल में मोक्ष पाने को
प्यास दर्शन की है मन में
सफलकर आस को मेरी—नजर भर देख···

(५)
क्षमा कर दोष को मेरे
विरद को देख के अपना
दो ब्रह्मानन्द कर करुणा
मिटा दे जन्म की फेरी—नजर भर देख···

भजन १८

सांचा तू गोपाल

सांचा तू गोपाल सांच, तेरा नाम है
जहां सुमरन होय तेरा, धन्य सो ठाव है
सांचा तू···

(२)
साचा तेरा भगत जो, तुझको जानता
तीन लोक को राज, वह मन नहीं मानता
सांचा तू···

(३)
झूठा नाता छोड़, तुझे लिवा लाया
सिमर तिहारो नाम, परम पद पाया
सांचा तू···

(४)
जिन एह लाहा पायो यह जग आयेके
उतर गयो भव पार, तेरो गुन गाय के
सांचा तू···

(५)
तू ही मात, तू ही पिता, तू ही हित बन्धु है
कहत है, यह तेरो दास, तुझ बिन धुन्ध है
सांचा तू···

भजन १६

सहारा रहमतों का

तेरी रहमतों का सहारा ना होता
तो दुनिया में मेरा गुजारा न होता

(२)

तेरी बख्शिशों से मैं जिन्दा हूं मालिक
तेरी बन्दगी से मैं बन्दा हूं मालिक
वरन् जहां में, मैं इक गंवारा सा होता
तेरी रहमतों···

(३)

मैं अलमस्त हूं, सदा यह भूल जाता
ठोकर लगे न, तू, दीपक जगाता
यदि तू न होता, कोई, हमारा न होता
तेरी रहमतों···

(४)

तेरे भक्त विष को, पी मुस्कुराते
प्रभु इच्छा है, यह गाने सुनाते
तुझे भक्त, तेरे भक्तों को, प्यारा न होता
तेरी रहमतों···

(५)

इ संसार सागर भंवर जाल घेरा
टा टोप पापों का छाया अन्धेरा
तेरी ज्योति का गर, सितारा न होता
तेरी रहमतों···

मैंनूँ सेवादार बना

औगनां दा मैं भरया मैंनू चरणीं अपनी ला
चंगा कम मैं कदे वी न कीता
नाम तेरा मैं कदे वी न, लीता
मेरे औगनां ते पर्दा पा।
औगन दा मैं भरया······

(१)

सह-सह दुःख मेरा दिल घबराया
जग तेरा मैंनूं रास न आया
मेरे दिल दे दुःखड़े मिटा।
औगनां दा मैं भरया······

(२)

मेहर करीं मेरे ऐब न खोलीं
पापों वालो, गठरी नू, कदी वी न खोलीं
मैंनू दुःखां तों आजाद करा।
औगुनां दा मैं भरया······

प्रार्थना

हे सर्व-शक्तिमान पिता,
हम आपके बच्चे हैं,
आप हमारी रक्षा करना
हम, क्रोध को शान्ति से जीतें,
लोभ को, संयम से जीतें
मोह को, प्यार से जीतें।
पल-पल में आपका ध्यान करें
हमारी द्वैत बुद्धि को मिटाना।
सबके घर में सुख शान्ति देना,
रोगों का नाश हो,
क्लेशों का नाश हो।
सब जन सुखी रहें
आपका नाम लें
बस यही प्रार्थना है
स्वीकार करो, स्वीकार करो।

ओ३म् शान्ति शान्ति शान्ति

मुद्रक : राजेश प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली-६ दूरभाष : ५१४५१६